



पत्रांक/Ref. No. : ५५/१७०

दिनांक/Dated: 11-01-13

सचिव,

कला संस्कृति एवं युवा विभाग,
बिहार, पटना ।

मिथिलांचल की हृदयस्थली में अवस्थित मधुबनी जिला ऐतिहासिक एवं पौराणिक दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्ध भू-क्षेत्र रहा है । सम्पूर्ण मिथिलांचल विभिन्न धर्मों के सिद्ध संतों, उद्भट्ट विद्वानों एवं धर्म प्रचारकों की जन्म भूमि और कर्म भूमि के रूप में विख्यात है । इस जिला के झंझारपुर अनुमंडलान्तर्गत अंधराठाढ़ी एवं झंझारपुर प्रखंडों के अनेक भू- क्षेत्रों में पाये जाने वाले प्राचीन मंदिरों, मूर्तियों, डीह तथा स्तूपों से इस बात का प्रमाण पुष्ट होता है कि यहां की भूमि में इतिहास के स्वर्णिम अध्याय दबे पड़े हैं । उनकी खोज आज समय की बड़ी आवश्यकता है ताकि उन्हें संरक्षित किया जा सके और भावी पीढ़ियों को उससे लाभान्वित कराया जा सके ।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अंचल पटना द्वारा वर्ष 2008 में इस क्षेत्र के कतिपय स्थानों का गहन सर्वेक्षण कराया गया था । सर्वेक्षण दल में पुरातत्वविद एवं तकनीकी विशेषज्ञ शामिल थे । सर्वेक्षण दल द्वारा जुटाये गये तथ्यों के अनुसार, अंधराठाढ़ी प्रखंड मुख्यालय से 02 कि०मी० पश्चिम अवस्थित ग्राम **पस्टन** में विशाल स्मारक के स्तूप का अवशेष है । ग्रामीणों द्वारा भूमि की खुदाई से वह स्तूप उजागर हुआ था । वहां प्राप्त ईंटों के आकार - प्रकार से यह स्तूप के बाहरी हिस्से के सैंदर्यीकरण में प्रयुक्त हुआ प्रतीत होता है । उसकी ईंटें भी संरक्षण के अभाव में गायब की जाती रही हैं । यह स्तूप 50 मीटर की परीधि में है । इसी के पास **दौराडीह** में भी स्तूप के प्रमाण मिले हैं । यह स्तूप 25 मीटर की परीधि में है । उसके निकट तीसरा स्तूप भी है जिसे **चचनरिया डीह** के नाम से जाना जाता है । यह पहले स्तूप से 01.5 कि०मी० की दूरी पर 25 मीटर की परीधि में है । इसी तरह का एक स्तूप झंझारपुर प्रखंड के ग्राम **लोहना** में भी है । स्थानीय लोग इसे **जलपा डीह** के नाम से जानते हैं । भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण अंचल, पटना के अनुसार यह गोलाकार है और लगभग 40 मीटर की परीधि में है । भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण अंचल, पटना के पत्रांक-- 01/97/झंझारपुर/07-08-एम०-11634 दिनांक-- 13 मार्च, 2008 की प्रतिलिपि भी सुलभ संदर्भ हेतु संलग्न है । इन वर्णित स्तूपों की तस्वीरें भी इनके ऐतिहासिक होने का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं । पुरातात्विक सर्वेक्षण के अनुसार ये **बौद्ध स्तूपों** के अवशेष हैं ।

कार्यालय (Office) : पुराना सचिवालय, पटना-800015. टेलीफैक्स (Telefax) : 0612-2205331

आवास (Resi.) : 12, जवाहर लाल नेहरू मार्ग (बेली रोड), पटना। दूरभाष (Tele.) : 0612-2215218, टेलीफैक्स (Telefax) : 0612-2215977

VVIMP-06.doc

ई-मेल (E-mail) : nitishmishraoffice@gmail.com. वेबसाइट (website) : www.rdd.bih.nic.in



दिनांक/Dated:

पत्रांक/Ref. No. :

पटना में 07 जनवरी, 2013 को अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संघ समागम के समापन समारोह में बौद्ध भिक्षु बोधिपाला ने मधुबनी जिले के अंधराठाढ़ी में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप होने का सप्रमाण दावा किया है। उन्होंने इसकी खुदाई कर इसे विकसित किये जाने पर भी जोर दिया है। यहां उल्लेख्य है कि, भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण दल के तथ्यों और भगवान बुद्ध से संबंधित विरासत के ज्ञाता एवं शोधकर्ता बौद्ध भिक्षु बोधिपाला के वक्तव्यों में समानता है जिसमें, मधुबनी जिलान्तर्गत अंधराठाढ़ी प्रखंड के ग्राम पस्टन में बौद्ध स्तूपों के खण्डहर होने को दोनों अधिकृत विशेषज्ञों के द्वारा प्रमाणित किया गया है। ग्रंथों के अनुसार भगवान बुद्ध एवं तीर्थंकर महावीर ने सुदीर्घ अवधि तक मिथिलांचल में प्रवास किया था।

वर्णित साक्ष्यों एवं बौद्ध धर्म के विद्वानों के मतों का सम्मान करते हुये यदि अंधराठाढ़ी एवं झंझारपुर प्रखंडों के उक्त क्षेत्रों में खुदाई किया जाय तो निश्चित रूप से विशाल बौद्ध स्तूपों का प्रकटीकरण हो सकेगा जिसे बौद्ध विद्वान बोधिपाला ने विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप बताया है। इसकी खुदाई करने से ही इतिहास के गर्भ में समाये विशाल बौद्ध स्तूप से सम्पूर्ण विश्व अवगत हो सकेगा और पर्यटकीय दृष्टीकोण से भी यह स्थान राष्ट्रीय मानचित्र पर उभर सकेगा।

राज्य सरकार भगवान बुद्ध से संबंधित विरासतों को संरक्षित एवं विकसित करने की दिशा में प्रयत्नशील है। विश्व बौद्ध समाज की दृष्टि भी इस तरफ लगी हुई है। अंधराठाढ़ी एवं झंझारपुर प्रखंडों में स्तूपों की खुदाई कर जमीन्दोज हो चुके बौद्धकालीन स्मृति अंशों पर से समय की धूल हटाकर उसे विश्व स्तरीय पहचान दिलाई जा सकती है। एतदर्थ इस दिशा में आवश्यक कार्रवाई करना चाहेंगे।

नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ,

Nitish Mishra
(नीतीश मिश्रा) 11-1-13